सैप्लिंग को उखाड़ना एवं परिवहन (Uprooting & Transportation):

आमतौर पर 110-120 दिनों के उपरांत सैप्लिंग उखाड़ने लायक हो जाती है। 1-2 दिन पहले मिट्टी को भींगों देने से सैप्लिंग उखाड़ने में आसानी होती है और जड़ों को नुकसान भी नहीं पहुंचता है। सैप्लिंग उखाड़ने के तुरंत बाद ही प्रत्यारोपण की सलाह दी जाती है। हालांकि प्रतिकूल परिस्थिति में इनको गन्नी कपड़ा से ढक्कर किसी छाँव में 2-3 दिनों तक रक्खा जा सकता है बशर्ते गन्नी कपड़ा पर लगातार पानी का छिड़काव बरकरार रहे ताकि सैप्लिंग सूखने न पाए। सैप्लिंग को अगर एक जगह से दूसरे जगह ले जाने की आवश्यकता हो तो कड़ी धूप में ना ले जाया जाए और निश्चितरूप से जूट के चटाई से ढक्कर ले जाया जाए और गन्नी कपड़ा पर लगातार पानी का छिड़काव करते रहें ताकि सैप्लिंग सूखने न पाए। छंटी हुई (dressed) सैप्लिंग परिवहन के लिए उपयुक्त होती है क्योंकि कम जगह में अधिक सैप्लिंग ले जाया जा सकता है। एक अच्छी सैप्लिंग 3-4 महीने में 90-120 सेन्टीमीटर व 5-6 महीने में 150 सेन्टीमीटर लंबी हो जाती है

प्रति एकड़ मुनाफा (Profit per acre):

अगर एक रूपये मुनाफे में एक सैप्लिंग बेची जाए तो पर भी प्रति एकड़ 1.28 लाख रूपये का मुनाफा 4-6 महीने में किया जा सकता है।

प्रकाशन: डॉ कणिका त्रिवेदी, निदेशक

संपादन: श्री एन. बी. कर, डॉ एस. चट्टोपाद्याय, श्री देबोजित दास, श्री आर. बी. चौधरी, श्री तापस कुमार मैत्र एवं श्री बिपद कर्मकार

मुखपृष्ठ व परिकल्पना: श्री एन. बी. कर एवं श्री तापस कुमार मैत्र

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार, बहरमपुर - 742101, मुर्शिदाबाद (प. ब.)

फोन: (03482) 253962 / 63 /64, **फ़ैक्स:** +91 3482 251233

ई-मेल: csrtiber.csb@nic.in / csrtiber@gmail.com,

ओएबसाइट: www.csrtiber.res.in

छपाई: सिकदार प्रिंटिंग प्रेस, चुयांपुर, बहरमपुर, पश्चिमबंग

Pamphlet No. 37 @CSR&TI, Berhampore Jan,2017

किसान नर्सरी : एक लाभजनक कदम

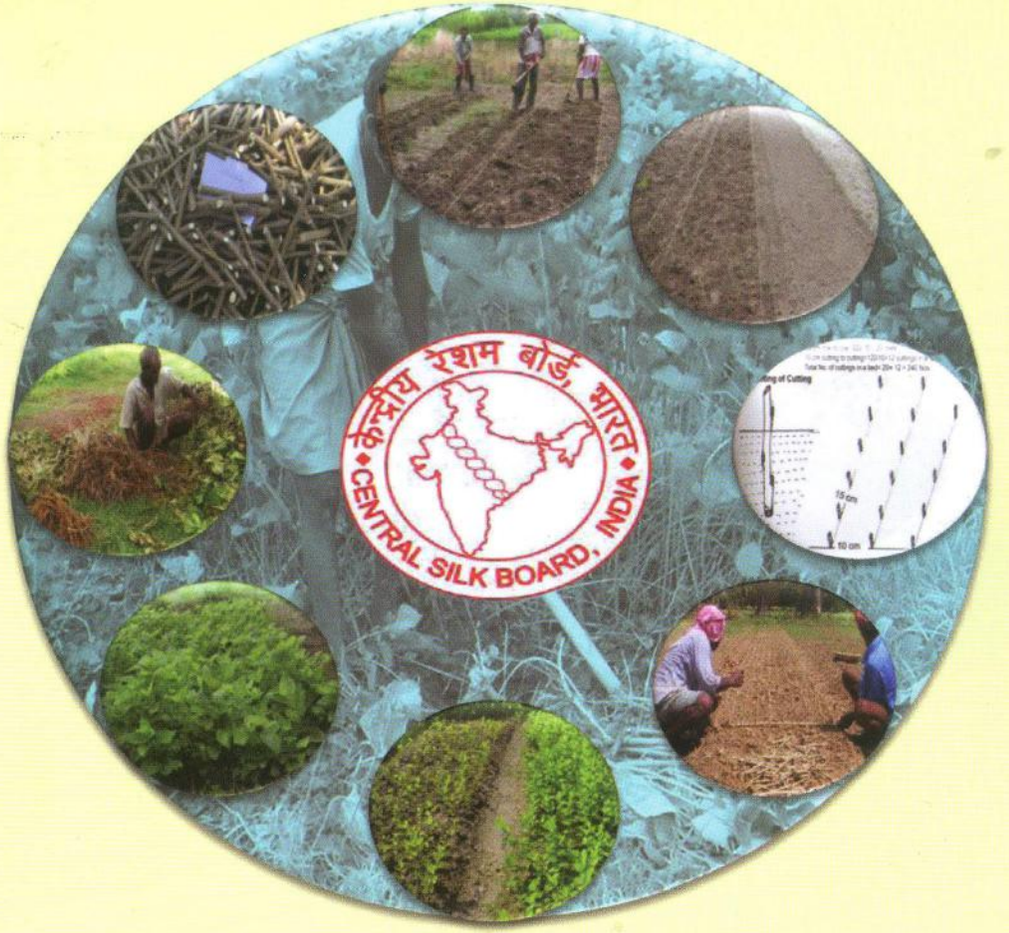

डी. चक्रवर्ती, सुरेश. के, आर. बनर्जी, पी. के. घोष

एवं

कणिका त्रिवेदी

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान

केंद्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार

बहरमपुर-742101, पश्चिमबंग

शहतूत एक बारहमासी पौधा है, जो अलैंगिक (Asexually) प्रक्रिया द्वारा प्रजनन करने में सक्षम है और इस वजह से यह अपने आनुवांशिक गुणवत्ता को वंश परंपरागत बरकरार रखता है। अतः अगर एक उच्च फलनशील गुणवत्तायुक्त प्रजाति का चयन हो जाए तो सिर्फ इसके कटींग (cutting) या कलम (sapling) के माध्यम से ही इसके गुणवत्ता को शत प्रतिशत बरकरार रखते हुए (true to type) इसे किसानों तक वितरित की जा सकती है। कटींग से कलम तैयार कर अगर किसानों तक पहुंचाया जा सके तो न केवल इसका मृत्युदर घटाया जा सकता है बल्कि इसका विकास दर भी बड़ाया जा सकता है और वह भी समान रूप से। इसी कारण विभिन्न पूर्वी एवं उत्तर- पूर्वी राज्यों में रेशम उत्पादन के विकास के साथ किसान नर्सेरी की अवधारणा इन क्षेत्रों में एक लोकप्रिय एवं लाभजनक कदम के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है। पश्चिम बंगाल में शहतूत वृक्षरोपण आमतौर पर वर्षा के बाद सितम्बर-अक्तूबर के दौरान किया जाता है। किसान नर्सेरी की स्थापना हेतु प्रमुख बातें निम्नवत है:

अनुशंसित किस्म (Recommended Variety): (S-1635)

भूमि की तैयारी (Land Preparation):

भूमि का चयन जल्स्त्रोत के समीप हो जहां अच्छी निकासी की व्यवस्था रहे एवं मिट्टी मिट्टी loamy हो। मिट्टी का पीएच 6.8 के आसपास शहतूत के लिये उपयुक्त माना जाता है। बेड की तैयारी दो प्रकार से की जाती है। पहला उन क्षेत्रों के लिए जहाँ पर्याप्त पानी उपलब्ध है वहाँ के लिए ऊंचा बेड और वर्षाश्रित क्षेत्रों के लिए धंसा हुआ बेड बनाने की सलाह दी जाती है। भूमि की गहरी (30-40 सेंटीमीटर) खुदाई कर 2-3 सप्ताह सूखने दिया जाए। तत्पश्चात 2-3 बार जोतकर व कंकड़ आदि सफाई के पश्चात इसे level कर दिया जाए। 3 मीटर x 1.2 मीटर आकार का बेड बनाने की सलाह दी जाती है। प्रत्येक बेड चारों ओर 25-30 सेंटीमीटर चौड़ी एवं ऊंची बांध व 25-30 सेंटीमीटर चौड़ी और 15-20 सेंटीमीटर गहरी irrigation channel से घिरी रहे। हर बेड में 5 कड़ाई FYM/Vermicompost मिलाई जाए और अगर चिकनी (clay) मिट्टी रहे तो 5 कड़ाई बालू मिलाने की सलाह दी जाती है। दीमक के आशंका वाले क्षेत्रों में बेड प्रस्तुति के दौरान 0.1% क्लोरोपाईरीफास (5 मिलीलीटर / लीटर पानी में, 2-3 लीटर प्रति बेड की दर से) मिट्टी में मिलाई जाती है।

कटींग की तैयारी एवं रोपण (Preparation & plantation of cuttings):

परिपक्व, स्वस्थ डालियाँ (~6-8 महीने का एवं ~10-15 मिलीमीटर व्यासयुक्त) कटींग प्रस्तुति लायक एवं सैप्लिंग तैयारी हेतु रोपण योग्य मानी जाती है। डालियों के मोटा निचला किनारा एवं ऊपरी कोमल किनारा रोपण हेतु अनुपयुक्त मानी जाती है। कटींग तेज़ कैची (knife) से काटी जाए ताकि इसके छिलके (bark) को नुकसान न पहुंचे और वे तीक्ष्ण रहे। सिंचाईयुक्त जमीन के लिये कटींग की लंबाई ~ 12-15 सेंटीमीटर (3-4 सक्रिय कलियाँ युक्त) और वर्षाश्रित क्षेत्रों के लिये कटींग की लंबाई ~ 20-25 सेंटीमीटर (5-6 सक्रिय कलियाँ युक्त) होनी चाहिए।

कटींग के रोपण से पहले इन्हें 0.2% बैविस्टीन (Bavistin) के मिश्रण में 10-15 मिनट तक डुबोकर रखा जाए ताकि कवक संक्रमण से रोका जा सके। रोपण से 2-3 दिन पहले बेड को भिंगो लेने से रोपण में आसानी होती है। रोपण के वक्त पौधा से पौधा एवं पंक्तियों से पंक्तियों की बीच की दूरी 10 सेंटीमीटर x 15 सेंटीमीटर हो और हर कटींग का कम से कम एक सक्रिय कली जमीन के उपर रहे। कटींग को जरा तिरछा (slanting) रोपकर निचली मिट्टी को उंगली से दबा दिया जाए। उपरोक्त बेड में लगभग 150 कटींग समायोजित की जा सकती है। अर्थात आनुमानिक 1.6 लाख कटींग का रोपण प्रति एकड़ किया जा सकता है (1065 बेड के माध्यम से) और अगर मान कर चलें कि 80% पौधे अंततक जीवित रहेंगे तो पर भी 1.28 लाख सैप्लिंग प्रति एकड़ उपलब्ध हो सकती है।

नर्सरी का रखरखाव (Maintenance of Nursery):

नवस्थापित नर्सरी के लिए साप्ताहिक सिंचाई की सिफ़ारिश की गई है। दो महीने पश्चात 15 दिनों के अंतराल में सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। हालांकि हर सिंचाई निश्चित तौर पर मिट्टी में पानी की उपलब्धता पर निर्भरशील है। शुरुआती दौर में निड़ाई सावधानीपूर्वक करनी चाहिए, हो सके तो एक महीने तक निड़ाई न ही की जाए ताकि कटींग भलिभांति जड़युक्त होकर जमीन को पकड़ ले। तत्पश्चात आवश्यकतानुसार निड़ाई की जाए। लगभग 60 दिनों के बाद (आवश्यकतानुसार निड़ाई के उपरांत) 250 ग्राम प्रति बेड यूरिया का छिड़काव करने के बाद हल्की सिंचाई करें ताकि पौधों की विकासदर बड़ जाए। Leaf स्पॉट रोग के लिए 0.1% बैविस्टीन (Bavistin) 15-20 दिनों के अंतराल व थ्रिप्स (Thrips) के लिए 0.1% Rogor का छिड़काव आवश्यक्तानुसार किया जाए।